(22) ISSN. 21-22 रानडे

जि ज्ञा सा
JIJÑĀSĀ

A Journal of the History of Ideas & Culture

Volume : XXXVIII 2021

A JOURNAL OF THE HISTORY OF IDEAS & CULTURE
2019 - 2021
TRUE COPY
जि ज्ञा सा

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS & COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon, Dist-Satara.

Department of History and Indian Culture
University of Rajasthan, Jaipur, India

Scanned with CamScanner

Content

S.No.	Title	Page No.
1	हिंदी दलित काव्य में आम्बेडकरवादी चेतना प्रा रगडे परसराम रामजी	1
2	A STUDY ON FEMALE EMPLOYEE'S ATTITUDE TOWARDS EFFECTIVENESS OF WORK FROM HOME ON PRODUCTIVITY AT INFOSYS,BANGALORE DURING COVID-19 Rubina Hamza, P.V, Dr. P. Kannan	5
3	आदिवासी उपन्यासों में नारी अस्मिता एवं विवशता का चित्रण डॉ. शंकर गंगाधर शिवशेट्टे	12
4	विष्णु प्रभाकर की कहानियों में 'राजनीतिक मूल्यसंघर्ष' डॉ. मुंडकर माधव राजप्पा	16
5	Impact of NPAs on Profitability of the Banks: A study of Bank of Baroda and ICICI Bank Dr. Ritesh Patel, Ms. Dixita Goswami	20
6	AN APPLICATIVE STUDY OF ROLAND BARTHES' SEMIOTIC CODES WITH REFERENCE TO KAZUO ISHIGURO'S CROONER S. Baveтra, Dr. R. Ravi	24
7	INFLUENCE OF DEMOGRAPHIC AND SOCIO-ECONOMIC FACTORS ON LOCUS OF CONTROL ON RESIDENTS OF SELECT SUBURBS IN MUMBAI CITY Mrs Nandini Jagannarayan, Dr TA Jayachitra	30
8	REVISITING AND RECLAIMING THE PAST IN M.G VASSANJI'S THE MAGIC OF SAIDA Betty Merin Eapen	38
9	EXPERIENCE OF SUFFERING AND DEATH IN THE SELECT POEMS OF SYLVIA PLATH Dr. K. Ashok Kumar	41
10	SHOPPING MALL CULTURE IN COCHIN JAYAPRAKASAN PP, DR. M.B. GOPALAKRISHNAN	45
11	ROLE OF SELF–HELP GROUP ON THE SOCIO-ECONOMIC DEVELOPMENT OF RURAL HOUSEHOLD WOMEN IN VARKALA BLOCK, THIRUVANATHAPURAM SREEKANTH I S, Lekshmi Mohan	52
12	PROBLEMS OF TILE INDUSTRY IN MANGALORE Dr. Sudharshan P, Dr. R.Velmurugan	59
13	INFLUENCE OF POST MODERN THEMES IN ARUN JOSHI'S NOVELS S. DEEPALAKSHMI, DR.K.SUNDARARAJAN	63
14	ईश्वर के संदर्भ में काकासाहेब कालेलकर का चिंतन काविठीया गणेश बी	67
15	PROBLEMS AND PROSPECTS OF SCRIBE IN THE LIFE OF A VISUALLY IMPAIRED: A CASE STUDY WITH SPECIAL REFERENCE TO SONITPUR DISTRICT, ASSAM Rahul Borah	71
16	A STUDY ON JOB SATISFACTION WITH SPECIAL REFERENCE TO UN-AIDED SCHOOL TEACHERS IN THANJAVUR DISTRICT Dr.P. VIJAYABANU, Mr. VASANTHKRISHNA	79

TRUE COPY

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon,Dist-Satara.

Scanned with CamScanner

Jijnasa
ISSN : 0337-743X

हिंदी दलित काव्य में आम्बेडकरवादी चेतना

प्रा. रगडे परशराम रामजी

हिंदी विभागाध्यक्ष शंकरराव जगताप आर्ट्स ॲंड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली, ता कोरेगाव, जि सातारा, मो ९८५०४९२९३३
संलग्न : शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

साहित्य समाज का दर्पण होता है, साहित्यकार सामाजिक में घटनाओं अंकन साहित्य के माध्यम से करता है। साहित्यकार समाज को चहू ओर देखता है । साहित्यकार के संबंध में कहा जाता है जो न देखे रवि वह देखे कवि।1980 के बाद हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, वृध्द विमर्श, किन्नर विमर्श, दिव्यांग विमर्श, किसान विमर्श एवं दलित विमर्श की चर्चा बडे पैमाने पर हो रही है। दलित साहित्य की पहचान आम्बेडकरी दर्शन से है। दलित साहित्य के प्रेरणास्रोत डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी है। डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी के विचारों से प्रेरित हो कर हिंदी दलित साहित्यकार ने साहित्य सजन किया है। दलित साहित्य संघर्ष एवं भोगे हुए यथार्थ का अंकन है । इस संदर्भ में डॉ. भरत सगरे कहते है- " संघर्ष के साथ जीने की इच्छा रखनेवाला, प्रेरणा देनेवाला साहित्य अपने युग की उपलब्धि होता है। भारतीय साहित्य में 'दलित साहित्य' इसका प्रमाण है।"1 पीडा, यातना, अपमान एवं आक्रोश का साहित्य दलित साहित्य है। वास्तविकता को अपने साथ लेकर चलने का काम आम्बेडकरवादी साहित्य करता है। "भोगे हुए यथार्थ का अंकन दलित साहित्य की आत्मा है। आम्बेडकरवाद सामाजिक परिवर्तन का मूलमंत्र है। यही दलित साहित्य का दर्शन बुध्द – कबीर – फूले – आम्बेडकर के विचारों का मिलाप दलित जीवन का अंकन समाजव्यवस्था एवं समाज जीवन का पथप्रदर्शक है। यह दलित साहित्यकारों की जीवन दृष्टि है।"2

TRUE COPY

दलित साहित्यकार अपनी वाणी को काव्य, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक एवं अन्य साहितिक विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्ती कर रहे है। सदियों चली आ रही रूढि, परम्परा एवं मनुष्य जाति को अपमानित करनेवाले मनुवादी संस्कृति को नकार रहे है। दलित कवियों ने जाति-व्यवस्था, वर्णभेद, धार्मिक बंधन को तोडकर अपनी अभिव्यक्ति की है – " दलित कविता में भावूकता के साथ दलित जीवन का बहुआयामी जीवन-चित्रित किया गया। हिंदी दलित कविता ने जाति-वर्णव्यवस्था, संस्कार आदि की सीमाएँ तोडकर दलितों की विद्रोहात्मक अभिव्यक्ति को वाणी प्रदान की।"3हिंदी दलित साहित्यकारों में मोहनदास नैमिशराय, श्यौराजसिंह बेचैन, ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, सुरजपाल चौहान, ईशकुमार गंगानिया आदि प्रमुख साहित्यकार है। हिंदी दलित कवियों के प्रेरणास्रोत डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी है। जिन का सम्पूर्ण जीवन दलितों के उत्थान में व्यतित हुआ। महामानव ने सदियों से सोए हुए समाज में चेतना निर्माण की है। अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई है। शिक्षा, संघटन एवं संघर्ष का नया मंत्र दिया है – "मानवी जीवन की मूल्यव्यवस्था, जनजागृति का अंगार, क्रांतिकारी संवेदना, शोषण के खिलाफ वाणी, अन्याय-अंधश्रध्दा-अज्ञान का विरोध दलित अस्तित्व एवं अस्मिता का रक्षक, धर्मनिरपेक्ष क्रांतिकारी विचार आम्बेडकरवाद है।" 4

डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी के विचारों एवं आंदोलन को साहित्य के माध्यम से आगे बढाने का काम कवि जयप्रकाश कर्दम जी कर रहे है। उनके 'तिनका तिनका आग' कविता संग्रह में कुल 38 कविताओं का समावेश है।इस संग्रह की कविताएँ डॉ. बाबासाहब जी के विचारों एवं दर्शन से प्रभावित है। कविताओं का अध्ययन करने के उपरांत लगता है कि

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon, Dist-Satara

Scanned with CamScanner

ISSN : 0337-743X

यह मात्र कविताएँ नहीं है, बल्कि, जातिव्यवस्था एवं साम्प्रदायिकताओं पर करारा व्यंग्य करती है।"साथ ही उनकी कविताओं में दलितों की अस्मिता से जुडे सवाल उभरते है जो इस बात के चश्मदीद गवाह है कि नई सदी में भी दलितों की अस्मिता को ठेस पहुँचाने में मनुवादी ने कोई कसर नहीं छोड रहे है।"5 कर्दम जी ने अपनी कविता 'अत्त दीपो भव' के माध्यम से दलित बंधुओं को बतलाया है कि जिस प्रकार से बाबासाहब आम्बेडकर जी ने दलितों में चेतना, स्वाभिमान, आत्मसम्मान जगाया था, उसे कभी-भी ढलने न देना, किसी के सामने नहीं झुकना, अपना जीवन स्वाभीमान के साथ व्यतित करना चाहिए – "सीखों अब्राहम लिंकन से / कि अभावों में रहकर भी / आगे बढा जा सकता / प्रेरणा लो आम्बेडकर से / कि तोडी जा सकती है / उत्पीडन की जंजीर /"6 जयप्रकाश कर्दम जी ने सवर्ण को कहा है कि हमारे पथ में आप रूकावटे नही डाल सकते । अगर अपने रूकावटे डाल दी तो तहस-नहस करने का सामर्थ्य हमारे भीतर है। यह साहस बाबासाहब आम्बेडकर जी के विचारों के कारण आया है। 'दरिया' नाम कविता के माध्यम से कर्दम जी कहते है – " पत्थरों / मेरे रास्तों में मत आओ / ..../ मैं दरिया हूँ / राह बनाना आता है मुझे / अवरोध बन कर / मेरा रास्ता रोकने की / करोगे जितनी कोशिश / मैं उतने ही वेग से तुमसे टकराऊँगा / तुम्हारी छाती को रौंदकर / निकल जाऊँगा / " 7 अन्याय-अत्याचार का जो डटकर मुकाबला करता है वही अपने जीवन में सफल बन सकता है। 'क्रांति का बिगुल बजाओं' कविता के माध्यम से कवि क्रांति की बात करता है, शोलों को व्यक्त करता है, दलितों में एक आग निर्माण करता हैं – "उतार कर फेंक दो / अपनी कैं सूली / फुफकारकर खडे हो जाओ / अपनी हुंकार से धरती – आसमान को हिला दो / अन्याय की इस दुनिया में / आग लगा दो / क्रांति का बिगुल बजा दो ।"8डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर ज्ञान का प्रतीक है। उनके विचारों एवं ज्ञान का पालन अपने जीवन में करना चाहिए न की, श्रध्दा के भाव में बहकर उनके विचारों को नहीं दबाना चाहिए – "आम्बेडकर करोडों दलितों की / अस्मिता का प्रतीक है / आम्बेडकर एक जीवंत विचार है / श्रध्दा के आवेग में / जीवंत विचार को मत दबाओ / आम्बेडकर को भगवान मत बनाओ।"9

TRUE COPY

आम्बेडकरी विचारों को आगे बढाने का काम कवि ईशकुमार गंगानिया ने किया है। ईशकुमार गंगानिया ने 'हार नहीं मानूँगा' कविता की भूमिका में कहा है – "मैंने जो कुछ भोगा और अपने चारों ओर जो अशोभनीय घटित हुआ है, उसकी चुभन, पीडा, वेदना मेरे हृदय पर अंकित हुई। नारी हो या पुरूष दोनों ही के आँसू विवशता, शोषण, छटपटाहट, बलात्कार मुझें अपने से लगे इन सबसे मेरा मन बहुत उद्वेलित हुआ और यह सब कुछ मेरे चेतन-अचेतन मन में घूमता रहा जो कविता संग्रह के रूप में साहित्य की जमीन पर खडा हैं।"10 'हर नहीं मानूगाँ' कविता संग्रह की प्रत्येक कविता कवि के प्रबल भावों की अभिव्यक्ति हुई है। पूरी सच्चाई के साथ कविने अपने को व्यक्त किया है। मनुष्य होते हुए भी दलितों को पशुओं के समान जीवन यापन करना पडा। कवि दलितों कों अपने अधिकारों के प्रति सचेत करता है। कवि डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी ने के विचारों से प्रभावित है। डॉ. बाबासाहब जी ने सोई हुई जनता को जगाया, जो वयक्ति अपने अधिकारों के प्रति सचेत नहीं होता, वह गुलामी का जीवन यापन करने लगता है। अतः कवि ने 'गुलामी की फसल' कविता में कहते है– "उठ जाग / स्वयं को पहचान / जला दे / गुलामी के भ्रूणा को / दिखा दे बंद मुठ्ठी की ताकत।"11 डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी ने जातिव्यवस्था, धर्मव्यवस्था एवं वर्णव्यवस्था पर कठोर प्रहार किया है। वर्णव्यवस्था के कारण शुद्रों का जीवन दैन्य बन चूका था। ब्राहमणवादी व्यवस्था का वर्चस्व निर्माण हुआ था। कवि कहता है – "जिन्दगी के हर क्षेत्र में / ब्राहमणवाद / कारगिल सा घूसपैठ कर रहा है / हाथ में गंडासा लिए / चारों ओर फिर रहा है / जिसने बाँध रखी है / आँखें पर पट्टी / श्रेष्ठता / अहंकार अंधविश्वास की।"12

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS & COMMERCE COLLEGE WAGHOLI
Tal-Koregaon, Dist-Satara

Scanned with CamScanner

कवि दलितों को अपने अधिकारों के प्रति सचत करता है। भारतीय संविधान करता डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी ने दलितों को अपन अधिकारों के प्रति जाग्रत किया था। कवि कहता है – "ऐ दलित / तेरे लिए यह हिन्दुत्व / एक मरीचिका के अलावा / कुछ भी नहीं है / इसका काम है / तुझे भ्रमित करना/ शोषण कर सर्वस्व छीनना / ..../ इस मायावी नगरी का / अपना दीपक खुद बन / तभी मान / सम्मान – स्वाभिमान / सब कुछ तेरा होगा।"13 ' इस काव्यसंग्रह की महत्वपूर्ण कविता 'हार नहीं मानूँगा' है। कवि अपना मनोबल हारना नहीं चाहता है। कवि की अदम्य लालसा एवं जीजिविषा का परिचय देती है। कवि कहता है – "मैं हार नहीं मानूँगा / अधिकार नहीं छोड़ूँगा / चाहे रहूँ बस्ती से कितना दूर / बेशक स्वाह हो जाए / झोपडा मेरा / ------------ नागरिक सुविधाओं से वंचित / मनोबल नहीं हारूँगा ।"14

"डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर दलित साहित्य का प्रेरणास्त्रोत हैं। उनका समूचा जीवन दलितोत्थान के लिए व्यतीत हुआ । महामानव ने दलित समाज को चेतित किया । अन्याय के खिलाफ जागृत किया । शिक्षा, संगठन, संघर्ष का सुत्र दिया। उसका प्रभाव दलित जीवन पर पडा । परिणामः वह जाग उठा । उन्होंने नयी व्यवस्था की नींव डाली।"15 मोहनदास नैमिशराय ने 'आग और आंदोलन' कविता संग्रह के माध्यम से दलित, पीडित, दीन-हीन, उपेक्षित महिला तथा दलितोंपर होनेवाले अन्याय-अत्याचार को वाणी दी हैं। इस काव्यसंग्रह के संदर्भ में कहा जाता है कि – "प्रस्तुत रचना वास्तव में काव्यसंग्रह कम किन्तु उनकके जीवन का सफरनामा अधिक है । इस प्रस्तुति के माध्यम से आपको उस आग का सामना करना पडेगा जो उनके हृदय में तीन-चार दशकों से धधक रही है और जो बीच-बीच में आंदोलन के रूप में प्रगट होती रही है।"16 इस काव्यसंग्रह में कुल 46 कविताएँ है। कविने अलग-अलग विषयों को लेकर कविताओं का सृजन किया है।स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि कवि डॉ. बाबासाहब जी से प्रभावित है । उन्हें अपने काव्य का प्रेरणास्त्रोत मानकर काव्य का सृजन करते है । शब्दों में बहुत ताकत होती है, शब्दों के माध्यम से ही समाज, राष्ट्र को बदला जा सकता है । शब्द यह शस्त्रास्त्रों के समान होते है । दलित लेखक भी शब्दों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करने लगा है, बरसों से हुए अन्याय, अत्याचार को शब्दों के माध्यम से व्यक्त कर रहे है - "शब्द चोट करते है / .... दलितों के सीने जब / छलनी होते हैं / शब्द उभरते हैं / शब्द बनते है धारदार / जहर बुझे चाकू की तरह।"17वर्णव्यवस्था का भय दिखाकर शुद्रो का छला गया है, वेद पुराण व शिक्षा से दूर रखकर सामान्य व्यक्ति पर अन्याय-अत्याचार किया गया है कवि कहता है कि अब ऐसा होनेवाला नहीं क्योंकि डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी के विचारों के कारण दलित जागृत हुआ है । कलम की ताकत को उसने पहचाना है, भले ही वह भूके पेट रहे परंतु शिक्षा को ग्रहण करता है, और कह उठता है - " कल झाडू से मैं तुम्हारी गंदगी हटाता था / आज कलम से / .... तुम्हारे भीतर की बेशर्म संस्कृति / के बीच पली / बढी ब्राहमणी कम्प्युटराईज्ड मेमरी को / ध्वस्त करना होगा ।"18 प्रकृति से मिलनेवाले पानी पर उच्चवर्ण का अधिकार है, तालाब, कुएँ का पानी पशु-पक्षी आसानी से पी सकते है परंतु दलित मनुष्य होकर पानी पी नहीं सकता । पानी के लिए महामानव डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी को 1927 में महाड के चोदार तले का सत्याग्रह किया । आज दलित पानी की समस्या से झूज रहा है।"पानी / अब कुएँ पर नहीं मिलता / उसमें कुत्ता मार कर / फेंक दिया है / किसी ने ---------- महज एक नल / और सौ घरों की बस्ती / पानी / बूंद-बुंद टपकता है / और धूप में हमारा पसीना / पानी अब कुए पर नहीं मिलता ।"19

निष्कर्ष :-

अतः कहा जा सकता है कि दलित आंदोलन के प्रेरणास्त्रोत डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी है । डॉ. बाबासाहब आम्बेडकर जी के विचारों से हिंदी दलित साहित्य प्रभावित है । डॉ बाबासाहब आम्बेडकर जी को दलित साहित्य का प्राण

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon,Dist-Satara.

Scanned with CamScanner

ISSN : 0337-743X

कहा जाए तो अनुचित नहीं होगा, अन्याय, अत्याचार, उच्चनिचता, भेदभाव, घृणा, कटूता, घिनता के खिलाफ लढना सिखाया। अधिकारों के प्रति सचेत किया। उन्होंने शब्दों की ताकत को पहचाना, पानी के लिए संघर्ष किया। दलितों को संवैधानीक अधिकार दिए। धर्मांध प्रवृत्तियों का विरोध किया। दलित कवियों ने भोगेहुए यथार्थ का वर्णन किया है। दलितों पे परम्परागत कामों को नकारकर कलम की ताकत को पहचाना है। कहा जा सकता है-

" बाबासाहब ने दिया, ऐसा हमें ऐसा प्रकाश।

जिसके द्वारा हो रहा, चारों ओर विकास।।" 20

संदर्भ सूची :-

01) इक्कीसवीं सदी का दलित साहित्य – डॉ. भरत सगरे पृष्ठ 63
02) वही पृष्ठ 64
03) दलित साहित्य चिंतन के आयाम – डॉ. भरत सगरे पृष्ठ 32
04) आम्बेडकरवादी साहित्य विचार – प्रा. दामोदर मोरे (डॉ. भरत सगरे) पृष्ठ 506
05) तिनका-तिनका आग-जयप्रकाश कर्दम (भूमिका से)
06) वही पृष्ठ 10
07) वही पृष्ठ 14
08) वही पृष्ठ 17
09) वही पृष्ठ 22
10) हार नहि मानूगाँ (अपनी बात) – ईश कुमार गंगानियाँ
11) वही पृष्ठ 19
12) वही पृष्ठ 24
13) वही पृष्ठ 46
14) वही पृष्ठ 58
15) इक्कीसवीं सदी का दलित साहित्य – डॉ. भरत सगरे पृष्ठ 66
16) आग और आंदोलन – (प्रकाशकीय – भारतीय बोध्द महासभा) मोहनदास नैमिशराय
17) वही पृष्ठ 38
18) वही पृष्ठ 57
19) वही पृष्ठ 66
20) 'बयान' अप्रैल 2013 – डॉ. सुरेश उजाला पृष्ठ 38

TRUE COPY

PRINCIPAL
SHANKARRAO JAGTAP ARTS &
COMMERCE COLLEGE, WAGHOLI
Tal-Koregaon, Dist-Satara.